Vol 3 Issue 4 Oct 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-4, Oct-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

आधुनिक महिला साहित्यकारों की दृष्टि में स्त्री–विमर्श

राखी उपाध्याय , कुसुम
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
शोध छात्रा
डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

सारांश : वैदिक काल में जहाँ स्त्री की स्थिति उच्च थी, वहीं मध्यकाल में वह संपत्ति समझी जाने वाली लगी और आधुनिक युग में उसे अपना व्यक्तित्व प्राप्त हुआ। इस व्यक्तित्व की प्राप्ति के लिए स्त्री को कड़ा संघर्ष करना पड़ा, लेकिन अभी भी समाज में उसकी स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाई। परम्परागत विचारधारा के अनुसार पुरुष वर्ग के एक तबके को यह सह्य नहीं कि युग चेतना से प्रभावित स्त्री अपने व्यक्तित्व का स्वतंत्र रूप से विकास करे, लेकिन स्त्री जागृति की लहर ऐसी आई जो स्त्रियों को झकझोर कर आगे बढ़ी और स्त्री अपने व्यक्तित्व के प्रति पूर्ण स्वतंत्रता का संकल्प कर अपने अधिकारों के प्रति डटी रही। इसमें स्त्री स्वावलम्बन ने स्त्री को मजबूत स्थिति प्रदान की।

कुँजी शब्द – स्त्री लेखन, स्त्री स्वावलम्बन, स्वाभिमानी, स्त्री समर्थता, स्त्री शिक्षा, स्त्री उपेक्षाएँ, जिम्मेदारी, आत्मविश्वासी, स्वयं निर्धारिका, प्रौढ़ स्त्री लेखन।

प्रस्तवाना :

सृष्टि में जीवन उत्पत्ति का स्रोत शक्ति में विद्यमान है। और स्त्री शक्ति का ही रूप है। शक्ति स्वरूप ऊर्जा के अभाव में त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु महेश (सृष्टि के सृजनकर्त्ता, पालनहार, संहारक) भी निरूपाय हो जाते हैं। इसी शक्ति के कारण आज भी लक्ष्मी–नारयण, गौरी–शंकर, सीता–राम, राधा–कृष्ण आदि नामों से पहचाने जाते हैं।

इस आध्यात्मिक लोक का पूर्ण प्रभाव वैदिक काल पर भी था। यहाँ स्त्रियों की बड़ी ही सम्मानजनक स्थिति थी। वेदों में अनेक जगह लोपामुद्रा, रोमस, घोशा, सूर्या, यमी, अपाला, विलोमी, सावित्री, विश्वंभरा, कामायनी, श्रद्धा, देवयानी आदि के नाम मिलते हैं, जिन्हें विद्धता के आधार पर ऋषिका और ब्राह्मणी कहा गया है। उस समय स्त्री को अपना जीवन साथ चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। वह अपनी इच्छानुसार आजन्म कुँवारी भी रह सकती थी और जिन्हें पिता की संपत्ति में उत्तराधिकारी भी बनाया जाता था। स्त्री के बिना धार्मिम कृत्य, अनुष्ठान सम्पन्न नहीं होता था। वे वेद अध्ययन के साथ–साथ अध्ययन भी करती थी।

लेकिन उत्तरवैदिक काल में स्त्री की स्थिति बदलने लगी। पुरुषों ने स्त्री पर हावी होना शुरु कर दिया था। इस कारण – "उत्तरवैदिक काल में द्रविड़ों की हार से द्रविड़ नारियाँ जब आर्य परिवार में दासियों के रूप में शामिल हुई तो इनमें से योग्य, गणी, बहादुर स्त्रियों ने आर्यों के दिल जीत लिए, यहीं से आर्यों में बहु विवाह प्रथा का प्रचलन हुआ।"[1]

इसका परिणाम यह हुआ कि स्त्रियाँ अपने सम्मान से पदच्युत होने लगीं। सिर्फ आज्ञापालन और पति सेवा ही स्त्रियों का प्रमुख गुण व कर्त्तव्य हो गया। विधवा विवाह पर भी प्रतिबन्ध लगने लगे।

मध्यकाल में आते–आते स्त्री–शिक्षा भी प्रतिबंधित हो गई। सती प्रथा चरम सीमा तक पहुँच गई। स्त्रियों के समस्त अधिकार छीन लिए गए। उसे मनोरंजन और विलासिता की सामग्री मात्र समझा जाने लगा। मध्यकालीन सीमाओं में बंधी स्त्री अशिक्षा, बाल–विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा जैसे जकड़नों में कैद होकर रह गई।

इसके बाद ब्रिटिश राज्य का आगमन हुआ जिसके प्रभाव के भारत के सकारात्मक परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। अनेक समाज सुधारकों का ध्यान पिछड़े वर्गों के साथ स्त्री की ओर भी केन्द्रित हुआ। उनमें से राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, पण्डित रमाबाई, महर्षि कर्वे, महात्मा गाँधी जैसे सुधारकों ने सामाजिक सुधार के साथ–साथ स्त्री शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया। सती प्रथा का उन्मूलन, बाल–विवाह पर प्रतिबन्ध, विधवा पुनर्विवाह की स्वीकृति, स्त्री सम्पत्ति का अधिकार जैसे कानून बनाकर स्त्री को सामाजिक न्याय देने का प्रयत्न किया तथा उन्हें शिक्षित करने के प्रबंध भी किए। स्त्री को जागरूक करने के लिए शिक्षा अति आवश्यक थी इसलिए "सन् 1882 के एज्यूकेशन कमिशन के सुझावों पर अमल करते हुए सरकार ने भी स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देना प्रारम्भ कर दिया और सन् 1916 ई. में महर्षि कर्वे ने 'स्त्री विश्वविद्यालय' की स्थापना की।"[2]

इस प्रकार स्त्री शिक्षा का विकास होता गया और स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग होती गई। स्त्री की जागृति ही उसकी स्वतंत्रता, अधिकार, स्वावलम्बन आदि का कारण बनी जो उसे मुख्य भूमिका में खड़ा करता है।

स्त्रियों की स्थिति को स्त्रियों से बेहतर कौन समझ सकता था। इसलिए 20वी. शताब्दी के प्रारम्भ में स्त्रियों ने अपने अनुभव व अपनी अनुभूमियों को समाज के समक्ष रखने में रूचि ली। महिला संगठनों ने स्वयं इस कार्य को हाथ में लिया। इस तरह स्त्रियों की उन्नति और भी अधिक विकसित होने लगी।

हिन्दी लेखिकाओं ने अपने लेखों, कहानियों, उपन्यासों, और आलोचनाओं के द्वारा शोषकों को करारा जवाब देना शुरु कर दिया, इसलिए उनको कई विरोधों का भी सामना करना पड़ा है, लेकिन इन विरोधों का लेखिकाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, बल्कि स्त्री लेखिकाओं की तादात बढ़ती ही गई। जो अपनी यथार्थता के भार से अन्याय को कुचलने में कामयाब भी हुई। इसी कारण बीसवीं सदी को महिला जागरण का युग भी कहा जाता है।

आज की स्त्री ये नहीं चाहती कि कोई उन पर तरस खाकर उनकी सहायता करे। यदि वह सहायता ले भी ले, तो वह कर्ज चुकाना भी बखूबी जानती है। पर पुरुश की प्रवृत्ति अब भी वैसी की वैसी ही। वह चाहता है मैं दूँ और महान कहलाऊँ, और स्त्री से लेना तो वह अपना अपमान समझता है। 'उषा यादव' ने अपने उपन्यास 'कथांतर' में इस मुद्दें को उठाया है। उनके पात्र देवेन्द्र जी सभी असहाय स्त्रियों की सहायता के लिए तत्पर रहते हैं और बदले में कभी किसी से कुछ नहीं चाहते। जब उपन्यास की पात्र मणि उनकी दीन दशा में उनकी सेवा करना चाहती है तो वह इंकार कर देते हैं। इस व्यवहार से मणि खिन्न होती है और उनकी हमदर्दी को ठुकराते हुए कहती है– "श्रीमान जो पुरुषोचित दंभ आपके पिता में था वही यथावत आपके भीतर मौजूद है। उन्होंने औरत को चमड़े का जूता मारा और आपने स्वर्ण पादुका से निहार करने की इच्छा रखी। पर जूता को अन्ततः जूता ही होता है न। चमड़े का हो या सोने का। आपके पिता के लिए औरत भोग की वस्तु रही और आपके लिए दया की। धूल में पड़ी है तो आपक उठाकर झाड़ पोछकर स्वचद कर देंगे। सस्ती है तो कीमती बना देंगे। टूटी है तो जोड़ देंगे। पर रही तो वस्तु ही न। एक प्राणी, एक जिंदा हस्ती, एक जीता जागता व्यक्तित्व वह आपके लिए भी न बन सकी। आप उस पर दया, करुणा कर सकते हैं पर बराबरी का दर्जा देकर उससे कुछ ले नहीं सकते। क्यों कुछ लेने से आपका पौरुष आहत होता है। ..... अभी तक सबको दिया ही दिया है न। हाथ बढ़ाकर दूसरों से कुछ लेने का सुख भी एक बार चखिएगा जरूर। उसकी मिठास अद्‌भुत होगी।"[3]

भला इन समर्थ वाक्यों को सुनने वाला कुछ बोल पाएगा। अपने बारे में उन्हें (देवेन्द्र जी) एक गहन सच का पता चला, तो क्या अभी तक वह एक झूठी आस पर जीते रहे हैं। अब तक ऐसा समर्थ कोई नहीं था जो उन्हें समझा सके, आज कोई माँ की तरह समझाने वाला मिला था जिसके जवाब में वह कुछ न कह सके और अवाक् होकर अपने ही भीतर छुपने के लिए जगह ढूँढने लगे। लेकिन वह उस शक्ति स्वरूपा को जाने कैसे देते, वह मणि की विचारोत्तेजक बातों को सुनकर हृदयगम हो जाते हैं और मणि की सेवा स्वीकार कर उसे माँ तक का दर्जा

दे देते हैं।

उपुर्यक्त गद्यांष से यही प्रतीत होता है कि स्त्री सिर्फ समानता का अधिकार चाहती है वह पुरुष से ऊपर बढ़ने की तनिक भी नहीं सोचती। अधिकार पाने के लिए स्त्री को अपनी नींव मजबूत करनी होगी और यह नींव घर से शुरु होती है। यदि स्त्री को अपने घर में पूर्ण अधिकार प्राप्त है या वह अधिकारों को पाने का हौंसला रखती है तो वह बाहरी समाज में भी अपने व अन्य स्त्रियों के अधिकारों के लिए लड़ने का जज़्बा कायम कर सकेगी। कहते हैं अपनों से लड़ना बड़ा मुश्किल होता है, लेकिन जब स्त्री ठान ले तो सही फैसला लेना मुश्किल नहीं होता। उशा यादव के उपन्यास का पात्र दरोगा जो अपने छोटे भाई की विधवा पत्नी को गर्भवती बनाकर बच्चे को अपनाने से मना कर देता है। इसका पता जब दरोगा की लड़की को चलता है तो वह अपनी चाची का पक्ष लेते हुए उसके बेटे को हक दिलाने की बात करती है। लेकिन उसके पिता उससे कोई भी बात नहीं करते। तब वह कहती है– "जिससे ये बातें हो सकती हैं, उसी से करिए। पर इतना जान लीजिए पिताजी, जो पाना चाहती हूँ, उसे हासिल करके रहती हूँ। ..... एक मजबूर और सताई हुई औरत को उसका जायज़ हक दिलाए बिना चैन से नहीं बैठूंगी।"[4]

शिक्षा स्त्री के जीवन में बहार बनकर आई। जहाँ वह अच्छे गुणों के कारण जानी जाती थी वहाँ वह अब अच्छे काम परिश्रमी व हुनर के द्वारा पहचानी जाती है। स्त्री अब पुरुषों पर निर्भर नहीं रहती क्योंकि अब वह विषम परिस्थितियों का सामना करने में हिचकिचाती नहीं है। पहले बाह्य सौन्दर्य स्त्री को मान देता था और कुरूप स्त्री को समाज चैन से जीने नहीं देता था वह टूटकर रह जाती थी लेकिन अब बाह्य सौन्दर्य को उतनी तवज्जो नहीं दी जाती, स्त्री के आंतरिक सौंदर्य को परखा जाता है और सम्मानित किया जाता है। पर समाज में कुछ नासमझ तो सदा ही विद्यमान रहते हैं, जो बाह्य सौन्दर्य को मूल समझते हैं। महाश्वेता देवी के उपन्यास 'स्त्री पर्व' की पात्रा 'लीला' बाह्य असौन्दर्य के कारण पति द्वारा छोड़ दी जाती है। इस घटना से लीला की सहेली सिमी को लगता है कि लीला के मन की गहराइयों में कोई खालीपन बचा है। लेकिन बाद में वह खुद को गलत स्वीकार करती है क्योंकि 'यह बात मुझे बाद में समझ आई कि ऐसा बिल्कुल नहीं था। लीला बेतरह भरी पूरी थी। बेहद सुखी थी। वह मुसीबत में फँसी औरतों और बच्चों को शरण देती है।"[5]

लीला एक पूर्ण सक्षम स्त्री है। इस तरह आन्तरिक सौन्दर्य के आगे बाह्य सौन्दर्य पिघलते हुए मोम की तरह प्रतीत हो रहा है। आज सौन्दर्य–असौन्दर्य महत्त्व नहीं रखता। और न ही कोई पुरुष इस बहाने से स्त्री को प्रताड़ित कर सकता है। अब स्त्री ऐसी छोटी बातों से टूटने वाली नहीं। अपनी आन्तरिक शक्ति द्वारा समाज का खुलकर सामना करती है। अपने हुनर से कार्यों को समाज के सामने रखती है तथा औरों को भी प्रोत्साहित करती हैं। आज स्त्री आत्मनिर्भर होकर हर काम में सक्षम हैं।

कुछ समय पहले जब स्त्री गृहस्थी और बच्चों को संभालती थी तो उसकी काबिलियत कहीं दब जाती थी। लेकिन अब ऐसा बिल्कुल नहीं है। यदि वह चाहे तो किसी भी विशम परिस्थिति में वह अपने मुकाम को हासिल कर सकती है। अलका सरावगी के उपन्यास 'कोई बात नहीं' का पात्र शशांक अपनी दादी व माँ के बीच का अन्तर समझकर कहता है– "बाकी औरतों के लिए अब भी कैरियर की बात सोचना उतना आसान नहीं। माँ ने अदिति के पैदा होने के बाद वकालत की पढ़ाई शुरु की और उसमें टॉप नम्बर लाकर शहर की सबसे बड़ी लॉ फर्म में प्रमुख वकील है।"[6]

हौसला व लगन हो तो किसी भी समय में मंजिल पाना मुश्किल नहीं है। उपर्युक्त पंक्तियों से अन्य स्त्रियों के हौसले भी बुलन्द होते हैं। इसके साथ ही आज स्त्री की आर्थिक व्यवस्था ठीक होना बहुत जरूरी है। एक मुख्य कारण यह भी रहा है कि स्त्री इतने वर्शों से पुरुषों की गुलामी सहने को मजबूर रही। लेकिन अब वह खुद ही स्वावलम्बी होने लगी है, जिससे उसे अपनी छोटी–छोटी जरूरतों के लिए पुरुष के सामने हाथ नहीं फैलाने पड़ते। स्वावलम्बी होने के कारण अब स्त्री अपने व्यक्तित्व का हनन नहीं होने देती और अपना हर फैसला भी वह खुद ही लेने लगी है।

मृदुला गर्ग की कहानी 'मेरा' का पात्र महेन्द्र अपनी आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण अपनी पत्नी का गर्भपात करवाना चाहता है। मीता अनमने मन से गर्भपात के लिए अस्पताल भी जाती है। जहाँ महिला डॉक्टर की अर्थपूर्ण बातों व सहानुभति की भावपूर्ण दृष्टि मीता को साहस व हिम्मत देने का काम करती है। डॉक्टर का कहना था कि स्त्री का यह निजी मामला है कि वह अपने बच्चे को गिराए या रखे। इस पर मीता की प्रतिक्रिया बदल जाती है– "वह अपनी कुर्सी पर आगे को खिसक आई और तीव्र उत्तेजना से भरभराते स्वर में फुसफुसाई, 'यह मेरा निजी मामला है।'[7]

इस प्रकार मीता अपने फैसले को क्षण में तय कर लेती है। फिर उसे यह परवाह नहीं रहती कि उसका पति उसका साथ देगा या नहीं, क्योंकि वह खुद को समर्थ महसूस कर रही थी और अपनी जिम्मेदारी को बखूबी जान गई थी। जॉब के अभाव में यह फैसला लेना मुश्किल हो जाता लेकिन मीता की जॉब थी इसलिए अपने बच्चे को जन्म देने का फैसला उसे ज्यादा मुश्किल नहीं लगा।

प्रतिक्रियावादी पुरुष वर्ग आज भी स्वयं विजय कामना लिये राजा जनक के दरबार में गर्व से सिर उठाये याज्ञवल्क के समान ही मानता है, जो गार्गी जैसे विदुशी को इसलिए तिरस्कृत और अनाधिकारी घोषित कर देता है, क्योंकि वह स्त्री है। गार्गी के बुद्धिपूर्ण साहसिक प्रश्नों का उत्तर न दे पाने पर याज्ञवल्क ने जोर से कहा – "गार्गी! यदि अब अधिक पूछेगी तो तेरा सिर सौ टुकड़ों में बँट जाएगा।"[8]

परन्तु युगीन स्त्री की बुद्धि की जिज्ञासा तथा जीवन की कर्मठ शक्ति को आज इस प्रकार की धमकियाँ किसी प्रकार भी कुचल सकने में असमर्थ है। स्त्री का स्वावलम्बी होना कभी–कभी पुरुष के आक्रोश का कारण होता है। यह सत्य है कि स्त्री की इस चेतना से प्राचीन मान्यताओं को ठेस लगी है, क्योंकि स्त्री आज आगे बढ़कर वो सब कुछ प्राप्त करना चाहती है जो सदियों से पुरुष की साथी रही है। पश्चिम सभ्यता व वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने स्त्री को अति आदर्शवादी मोह से विलग होकर सहज रूप में विचारने के लिए प्रेरित किया और स्त्री–पुरुष के संबंधों में मूलभूत परिवर्तन परिलक्षित होने लगा। कृष्णा सोबती के उपन्यास 'मित्रो मरजानी' में नई पीढ़ी की स्त्री का अंकन है, जो किसी सामाजिक विधान से डरती नहीं है। वह (स्त्री पात्र 'मित्रो') पति के समक्ष भी कभी सिर नीचा नहीं करती – "मित्रो को आदर्श का कोई मोह नहीं है न समानता का भय, न ईश्वर का। इसके लिए किसी विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है। यह मात्र मांस–मज्जा से बनी एक नारी है, जिसमें स्नेह भी है, ममता भी, माँ बनने का होंस भी।"[9]

मित्रों खुद को किसी से कम नहीं आँकती। इसलिए सास–ससुर और पति या किसी का भी भय उसे संत्रस्त नहीं करता। वह सभी का निर्भिकता से सामना करती है। मित्रों अपनी प्रवृत्ति को भूली नहीं है लेकिन वह आदर्शता में बंधना नहीं चाहती, इसलिए वह एक स्वतंत्र पंछी की तरह है जो अनन्त आकाश में विचरण करती है।

आज भी कई पुरुष स्त्री को कमत्तर आँकना नहीं छोड़ते। स्त्री को बेवकूफ समझने की भूल करते हैं। खुद की महानता को व्यक्त कर पुरुष स्त्री से कह तो देता है कि वह अपनी मर्जी से अपने कार्य व फैसले कर सकती है। लेकिन जैसे ही स्त्री अपनी इच्छा से कार्य करती है तो पुरुष की महानता रेत बन ढह जाती है। फिर उसका पुरुषत्व जाग जाता है। और अभी तक स्त्री को ही दोष देता रहा है। खुद को झाँककर उसने कभी नहीं देखा। परन्तु आज स्त्री, पुरुष के विचारों के साथ तनिक भी चलने को तैयार नहीं है। और अब न ही वह उसकी कठोरता और क्रूरता को सहन कर सकती है।

लेकिन उन सामाजिक विधानों का क्या करें जो स्त्री को पूर्ण अधिकार दिए जाने का दावा तो करती हैं। साथ ही उनसे भिन्न उपेक्षाएँ भी करती हैं– "युवतियाँ नौकरी करे पैसा कमाएँ तो ठीक, किन्तु उनके घरेलू काम और परिवार के प्रति स्वामिभक्ति में आड़े न आए, और उन्हें पुरुषों की तरह प्रतिस्पर्धाप्रिय तथा स्पष्टवादी न बनाए, यह अपेक्षा सामाजिक तथा सरकारी में गहरे पैठी हुई है।"[10]

फिर भी स्त्रियाँ अपनी प्रतिभा व क्षमता के बल पर आत्मनिर्भर बन समाज में अपना स्थान बना लेती है। जो अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारी को अपना कर्त्तव्य समझने लगी है। वह खुद को खोकर अपना सर्वस्य परिवार को देना चाहती है। उशा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खम्बे लाल दिवारें', में सुशमा नाम की पात्रा इसी जिम्मेदारी से दबी है उसकी जिन्दगी में खुशी बनकर 'नील' (नायक) आता है लेकिन वह उसके सामने अपनी विवशता को प्रकट करती हुई कहती है– "पहली बात तो यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं तुझसे कुछ छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बापू, दो बहने और भाई, सब कुछ मुझे ही करना है।"[11]

सुशमा परिवार का उत्तरदायित्व निभाने में अपनी जिन्दगी की आवश्यकताओं को भूल जाती है। वह मध्यवर्ग की है और घर पर कमाने वाला कोई नहीं है। इसलिए वही हैं जो परिवार का भरण पोषण करती है। और जीवन भर उन्हीं के लिए समर्पित होने का जज्बा भी रखती है।

इतना कुछ हो जाने पर भी समाज की परम्परागत धारणा जिसके कारण स्त्री के प्रति देखने का परम्परागत दृष्टिकोण आज भी परिवर्तित नहीं हुआ है। स्त्री जितनी भी आगे बढ़े उसके आगे परम्परा आड़े आती ही रही है। इस बारे में श्रीमती आशारानी व्होरा ने अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हुए अनेक प्रश्न उपस्थित किए हैं– "आज कहीं नारी के लिए योगदान दिखाई देता है तो उसी तरह जैसे अछूतोद्धार या अल्पसंख्यकों के लिए कुछ प्रतिशत सीटें रख दी जाती हैं। समानता केवल कागजों पर है। व्यवहार में स्थान अल्पसंख्यकों के समान है। ऐसा क्यों क्या वह अल्पसंख्या है?क्या वह दूसरे दर्जे की इंसान है?क्या वह बुद्धि या अन्य मानवीय गुणों में पुरुषों से हीन है। क्या वह केवल पुरुष–पति का मन बहलाव करने की वस्तु और संतान पैदा करने की मशीन भर है? उसका अपना निजी अस्तित्व, पहचान कहाँ है?निजी तौर पर विश्वहित में उसकी अन्य भूमिका

क्यों नहीं रही है? ये और ऐसे कई प्रश्न आज भी प्रबुद्ध नारी को कुरेद रहे हैं, कहीं कम कहीं ज्यादा, पर मूल प्रश्न समान है।"[12]

असल में देखा जाए तो समानता की भागीदारी केवल विधान के कागजों पर है वास्तविकता तो इसके कोसों दूर कहीं सिमटी हुई हैं। लेकिन स्त्री में इतनी सामर्थ्य है कि वह आरक्षण को भी नकारना चाहती है। स्त्री समानता के अनुसार ही समाज में अपनी प्रतिष्ठा व पद को हासिल करना चाहती है। वह किसी को पीछे खींचकर आगे नहीं बढ़ना चाहती बल्कि पूर्ण सबल होकर अपनी जगह पर अपना हक चाहती है। स्त्री की बिल्कुल वैसी ही दशा, वैसा ही अनुभव, वैसी ही कश्मकस और वहीं अभिव्यक्ति सिर्फ एक स्त्री ही कर सकती है, इस संबंध में प्रभा खेतान ने लिखा है– "स्त्री किसी को गौण नहीं बनाती, जनतांत्रिक मूल्यों में उसकी आस्था है, और इस प्रसंग में स्त्री लेखन ज्यादा क्रान्तिकारी होने की संभावना रखता है। स्त्री के सम्मुख साहित्य की तमाम व्यवस्थाओं को स्वीकारने की बाध्यता नहीं, या फिर उन तमाम पारंपरिक अपेक्षाओं से समझौता करना उसकी अंतिम परिणति। या फिर पितृसत्तात्मक परंपरा के सांस्कृतिक तथा राजनीतिक अवदान के प्रति वह अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती रहे, बल्कि इस बाध्यता से स्त्री लेखन को मुक्त होना होगा ताकि वह स्वयं को नयी शैली में अभिव्यक्त करे। व्यवस्था से मुक्ति की चाहना को अपने लेखन में जितनी शिद्दत से वह महसूस करती है या जितनी गहराई से तन्मय होकर अपने उत्पीड़न और शोशण को वह अभिव्यक्त कर पाती उतना पुरुष लेखन द्वारा संभव नहीं।"[13]

आज हिन्दी लेखन में अनेक लेखिकाओं ने अपना सर्वोत्तम योगदान दिया है। सभी ने स्त्री की दशा व दिशा को पूर्ण यथार्थता में प्रत्यक्ष चित्रित किया है। ग्रामीण व शहरी परिवेश में स्त्री की जो झलक मिलती हैं, अभी भी उस पर बहुत कुछ लिखना शेश है। क्योंकि अभी भी कुछ ऐसा है जो पूर्ण रूप से पकड़ में नहीं आया है, जो व्यक्त नहीं हो पा रहा है, इस पर मृणाल पाण्डेय की निम्न पक्तियाँ "ज्यों–ज्यों स्त्री लेखन अधिक प्रयोगधर्मी और प्रौढ़ होता जा रहा है, जीवन को वह अपनी दृश्टि से ठिठककर बार–बार परख रहा है।"[14]

इस प्रकार हिन्दी लेखिकाएँ अपने लेखन को और भी अधिक दृढ़ता प्रदान करना चाहती है, जितना प्रौढ़ अध्ययन करती है उसे लगता है कुछ छूट गया है। वह पलभर रुककर गहनता से अपने लेखन को परखती है। फिर अगले लेखन को और अधिक दृढ़, गहन, प्रौढ़ और विस्तृत बनाती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि स्त्री का अनुभव अब सीमित नहीं रहा। उसकी प्रवृत्ति अब दुःख को घूँट–घूँट कर कंठ के नीचे उतारने की नहीं रही वह साहसी और निर्भिक हो गई है। जनतांत्रिक चेतना के कारण अब वह किसी भी रूप में दूसरे व्यक्ति पर निर्भर नहीं है। हर क्षेत्र में स्त्री अधिकाधिक संख्या में आगे बढ़ रही है जो उसकी बौद्धिकता तथा सामाजिक जागरूकता की निशानी है। ये सभी स्थितियाँ परिवर्तन की सूचक हैं। स्त्री और समानता एक सिक्के की तरह है जो साथ है लेकिन एक दूसरे के पूरक। लेकिन स्त्रियों ने हार नहीं मानी। आज कई कार्यों में स्त्री पुरुष के समकक्ष है। इसलिए स्त्री समानता के अधिकार में शामिल हो रही है। स्त्री खुद को हेय या थाती के रूप में बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करती। उसे सिर्फ अपने अधिकार और पूर्ण स्वतंत्रता की चाह है। मुख्यतः स्त्री का स्वावलम्बी रूप उभर कर सामने आया है जो स्त्री की प्रतिश्ठा बनाए रखने में नींव का काम कर रही है।

सन्दर्भ सूची

1.शैलजा माहेश्वरी, 1997, हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी, पृ.सं. 45, विकास प्रकाशन, कानपुर

2.गोपा जोशी, 2006, भारत में स्त्री असमानता, पृष्ठ– 123, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

3.उषा यादव, 2005, कथांतर, पृ.सं., 254, 255, किरण प्रकाशन, दिल्ली

4.वही, पृ.सं. 96

5.अनुवादक सुशील गुप्ता, स्त्री पर्व : महाश्वेता देवी, पृ.सं. 171, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2003

6.अलका सरावगी, कोई बात नहीं, पृ.सं. 63, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2004

7.मृदुला गर्ग, 2004, स्थगित कलद्व पृ.सं. 123, प्रकाशन कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली

8.डॉ. स्वर्णलता, 1975 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहितय की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, पृ.सं. 250

9.वही, पृ.सं. 250

10.मृणाल पाण्डेय, 2006, जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं, पृ.सं. – 140, राधाकृष्ण, प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

11.डॉ. शुभद्रा, 1984, हिन्दी उपन्यास परम्परा और प्रयोग, पृ.सं. – 292, अलंकार प्रकाशन, दिल्ली

12.श्रीमती आशारानी व्होरा, 1986, भारतीय नारी : दशा दिशा, पृ.सं. – 168, प्रकाशन नेशनल, दिल्ली

13.प्रभा खेतान, 2003, उपनिवेश में स्त्री, पृ.सं. 50, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि., नई दिल्ली

14.मृणाल पाण्डेय, 2006, जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं, पृ.सं. – 51, राधाकृष्ण, प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net